शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

मधु कांकरिया कृत 'पत्ताखोर' उपन्यास में चित्रित युवा विमर्श

डॉ. शुभांगी सोनी
सहायक आचार्य, हिंदी
सेंट जेवियर कॉलेज, जयपुर

शोध सार

उत्तर-आधुनिक जीवन के विकसित एवं प्रगतिपथ पर अग्रसर राष्ट्र में युवाओं का नैतिक पतन आज वैश्विक स्तर पर चिंता का विषय है। युवाओं का मानसिक पतन न केवल एक पीढ़ी का विनाश मात्र है अपितु भावी पीढ़ी की जीवन-शैली, आदर्श एवं अंतत: राष्ट्र के भविष्य को प्रभावित करने वाला अत्यंत गंभीर मुद्दा है। हाशिये की अस्मिताओं में प्रमुख रूप से स्त्री, दलित, आदिवासी आदि पर साहित्य लेखन के द्वारा बहुत चर्चा की गई लेकिन इनके साथ ही अत्यंत महत्वपूर्ण युवा वर्ग भी आज अपने बिखरे हुए व्यक्तित्व को समेटने और अपने अस्तित्व को स्थापित करने हेतु जद्दोजहद कर रहा है। युवा एक राष्ट्र की स्थिति को बयान करने वाली सबसे महत्वपूर्ण कड़ी होती है। युवावस्था की उम्र में युवाओं को परिवारिजनों के समय और उनके प्रेम की आवश्यकता होती है यदि इस उम्र में युवाओं की मानसिक उलझन, अकेलेपन को सकारात्मक ढंग से शांत किया जाए तो उनका वर्तमान समृद्ध और भविष्य सुदृढ़ बन सकता है।

बीज शब्द

पत्ताखोर, नशाखोरी, शाश्वत आनंद, विदड्राअल, हेरोइन, मानसिक विखंडन, अजनबीपन, कैरियर चेतना।

मूल आलेख

युवा विमर्श को समझने से पूर्व युवा का अर्थ जानना आवश्यक है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हरलॉक के अनुसार "यह समस्या की आयु, स्थापित होने, सांवेगिक तनाव, सामाजिक अलगाव, उत्पादनशीलता, मूल्य परिवर्तन, नवीन जीवन शैली के साथ समायोजन की आयु

है।"[1] युवा विमर्श सामान्यतः अवस्थागत बदलाव के साथ युवामन की मानसिकता में आए सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का मूल्यांकन है। युवा विमर्श आधुनिक जीवन में युवाओं के मानसिक स्तर की उलझनों का सामाजिक मान्यताओं और प्रतिबद्धताओं के साथ तालमेल का संघर्ष है। अतः युवाओं के मानसिक द्वन्द्वों, उलझनों, सवालों की मनस्थिति को समझने हेतु जो विचार विमर्श किया जाता है वही 'युवा विमर्श' है।'मधु कांकरिया द्वारा लिखित 'पत्ताखोर' उपन्यास समकालीन युवा जीवन एवं राष्ट्र की भावी पीढ़ी के संतुलित और सफल जीवन के संदर्भ में चिंतन करने हेतु आमजन को विवश करता है। यह उपन्यास वर्तमान समय में वैश्विक स्तर में युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृति के प्रति ध्यान केन्द्रित करता है। साथ ही उन कारणों पर चिंतन करने हेतु समस्त पाठक वर्ग को सतर्क करना इसका उद्देश्य है जिसके कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युवा नशे के भ्रामक जाल में उलझते जाने को लालायित और विवश होते जा रहे हैं। युवा जीवन के समस्त आयामों को सूक्ष्मता से परखते हुए युवा मन की उलझनों की तह में पहुँचना इस उपन्यास की आधारभूमि है। यह सुनिश्चित है कि युवा ही राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता है और यदि वे जीवन की मुट्ठी भर चुनौतियों से सामना कर पाने में असफल रहते हैं तो उनके जीवन में शाश्वत आनंद और आत्मविश्वास के आधार को खोजना साहित्य और समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

हरिशंकर परसाई युवा मानसिकता को अत्यंत सूक्ष्मता से परखते हुए युवाओं की मानसिकता के संदर्भ में लिखते हैं कि "दिशाहीन, बेकार, हताश, नकारवादी, विध्वंसवादी बेकार युवकों की यह भीड़ खतरनाक होती है। इसका उपयोग महत्वकांक्षी खतरनाक विचारधारा वाले व्यक्ति और समूह कर सकते हैं। इस भीड़ का उपयोग नेपोलियन, हिटलर और मुसोलिनी ने किया था। यह भीड़ धार्मिक उन्मादियों के पीछे चलने लगती है। यह भीड़ किसी भी ऐसे संगठन के साथ हो सकती है जो उनमें उन्माद और तनाव पैदा कर दे। फिर इस भीड़ से विध्वंसक काम कराए जा सकते हैं। यह भीड़ फासिस्टों का हथियार बन सकती है। हमारे देश में यह भीड़ बढ़ रही है। इसका उपयोग भी हो रहा है। आगे इस भीड़ का उपयोग सारे राष्ट्रीय और मानव मूल्यों के विनाश के लिए, लोकतन्त्र के नाश के लिए करवाया जा सकता है।[2] एक युवा यदि सही दिशा में आगे बढ़े तो वह विकास की अनगिनत

संभावनाएं उत्पन्न कर सकने की असीम ऊर्जा और क्षमता रखता है लेकिन यदि उस युवा की सोच को सही दिशा न मिले तो वह विनाश का कारण भी बन सकता है। इस प्रकार युवा राष्ट्र के विकास में नींव का पत्थर होने की भूमिका अदा करते हैं।

मधु कांकरिया कृत 'पताखोर' उपन्यास का प्रमुख चरित्र आदित्य है। इस उपन्यास में आदित्य के माध्यम से समग्रत: समकालीन दौर में युवा जीवन के संघर्ष और चुनौतियों को रूपायित किया गया है। पूंजीवाद के प्रभावस्वरूप एवं बढ़ती महंगाई के समय में दैनिक जरूरतों को पूर्ण करने के साथ उच्च-जीवन शैली में जीने की आकांक्षाओं के द्वंद्व में स्त्री-पुरुष दोनों नौकरीपेशा अथवा पैसा कमाने का स्रोत चाहते हैं जिससे वे अपने जीवन की सभी ख़्वाहिशों को पूर्ण कर सके। लेकिन ज़िंदगी की इन भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समकालीन दौर के माता-पिता कदाचित यह विस्मृत अथवा नजरंदाज कर देते हैं कि उनकी संतान भी उनके समय, साथ और स्नेह की आकांशी है और पैसा कमाने से कई गुना ज्यादा अपनी संतान की मानसिक परिपक्वता अधिक महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार एक बीज को विशाल वृक्ष बनाने के लिए उपयुक्त खाद-पानी की आवश्यकता मायने रखती है ठीक उसी प्रकार एक युवा के चिंतन को सही दिशा देना और उसकी मानसिक उलझनों को सकारात्मक रूप से शांत करना एवं उनके अकेलेपन को अपने प्रेम से समृद्ध करना युवाओं के बेहतर भविष्य के निर्माण हेतु अहम भूमिका अदा करता है। आदित्य के पिता आदित्य की अकेलेपन की मनःस्थिति की गंभीरता को समझते हुए वनश्री से कहते हैं कि "ऊपर से कितना शांत ! कैसा स्थिर ! पर भीतर कितनी उठापटक, कितने जज़्बात ! कितनी लहरें....कैसा उद्वेलन ! कितना आलोड़न !"[3] स्वाभाविक है कि युवावस्था का दौर द्वंद्वपूर्ण होता है क्योंकि इस उम्र में एक ओर बालमन की भीतरी चंचलता, जिज्ञासा होती है लेकिन ऊपरी तौर पर उम्र का बढ़ते हुए युवामन की सतही स्थिरता होती है जिसे माता-पिता को हर कदम पर महसूस करने का प्रयास करना चाहिए एवं उन आशंकाओं का समाधान भी बांटना चाहिए जिससे युवाओं की समझ सही दिशा में परिपक्व बन सके।

स्वाभाविक रूप से माता-पिता अपने युवा-पुत्र के भविष्य को लेकर, उसके रोजगार के संबंध में बहुत चिंतित रहते हैं लेकिन इस चिंता को अपनी संतान के समक्ष एक संतुलित

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

रूप में अभिव्यक्त किया जाना चाहिए। माता-पिता अपने बच्चे के लिए ऐसा रोजगार चाहते हैं जो उसके भविष्य को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने में उचित हो लेकिन इस व्यग्रता में वे अपनी संतान के दृष्टिकोण को, जीवन के प्रति उसकी अपेक्षाओं एवं उसकी रुचि को नजरंदाज कर देते हैं जो कई बार बहुत अनुचित सिद्ध होता है। इससे सबसे अधिक क्षति उस युवा के आत्मविश्वास की होती है जो उसे सदैव अपने निर्णयों को लेकर शंका उत्पन्न करने का कारण बनती है। आदित्य की माँ वनश्री अर्थकेंद्रित दृष्टि से प्रभावित होने के फलस्वरूप मानती है कि पैसा और स्थापित नौकरी ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, सपने पूरे करना समय व्यर्थ गंवाना है। आदित्य गाना चाहता है, गायक बनना चाहता है लेकिन अपनी सोच को वह आदित्य पर भी थोपने का प्रयास करती है जिसके कारण आदित्य के भीतर का सौंदर्य, ऊष्मा, उत्साह मरने लगता है। वनश्री कहती है कि "गधे कहीं के, जैसा बाप वैसा बेटा। एक किताबी कीड़ा, एक गवैया ! रबिश ! बस एक परत उघाड़कर देखो..... गायक तुम्हें चप्पल चटकाते, उधार मांगते और भूखों मरते नजर आएंगे।[4] युवाओं के शौक और अभिरुचि के प्रति अभिभावकों का ऐसा हीन दृष्टिकोण उनके भीतर कुछ करने की गौरवान्वित भावना को कुचल देता है, जो एक युवा के भीतर ज़िंदगी के सौन्दर्य को नष्ट करने के समान होता है।

वर्तमान दौर की अर्थकेंद्रित और प्रतिस्पर्द्धात्मक परिवेश में मनुष्य में धैर्य की कमी होती जा रही है। आज हर कोई रातोंरात मालामाल और शोहरत कमाने का आकांक्षी है और इस अंधी, अनुचित लालसा में वह आलीशान ज़िंदगी के भविष्य के ख्वाब तो सँजोने लगता है लेकिन साथ ही अपने वर्तमान के बहुमूल्य समय को गंवा बैठता है और परिणामस्वरूप उसका भविष्य अंधेरी गुहा में तब्दील हो जाता है। इस अवस्था में उसके लिए ज़िंदगी बे-मायने सी बन जाती है। वन श्री आदित्य को कोई गायक या कलात्मक शौक सीखने के खिलाफ होती है क्योंकि उसका मानना है कि ये अभिरुचियाँ केवल मनोरंजन करने की चीजें है लेकिन एक मुकम्मल ज़िंदगी मात्र नौकरी से ही संभव है और इसी भय के कारण वह आदित्य के वर्तमान की ख़्वाहिशों को व्यर्थ समझती है। तब हेमंत बाबू आदित्य की ख़्वाहिश को महत्व देते हुए कहते है कि "वर्तमान ही सबसे बड़ा सत्य है, जिसकी उपेक्षा कर भविष्य को नहीं संवारा जा सकता है। उसका वर्तमान संभावनाओं से भरपूर है, हम उन संभावनाओं

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

की हत्या के अपराधी हैं। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त में सिर्फ एक संभावना उदित होते देखी थी और देखो, जो बालक गाय-भैंस को दिशा देता था वह एक दिन मगध को दिशा देने लगा। देखो, मेरी बात ध्यान से सुनो, सिर्फ वही व्यक्ति अपने आपके साथ एकांत में रह सकता है जिसकी भीतरी दुनिया समृद्ध है, स्मृतियों, विचारों से भरी-पूरी है पर एक बच्चा जिसकी भीतरी दुनिया अभी बनना ही शुरू हुई है – उसे अकेला नहीं छोड़ा जा सकता।[5] अतः यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि युवाओं के साथ-साथ उनके माता-पिता भविष्य को केंद्र में रखे लेकिन वर्तमान को अनदेखा करते हुए ऐसा करना बड़ी भूल साबित हो सकता है। युवा यदि अपने पसंदीदा शौक को अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चुनता है तो निश्चित रूप से वह जीवन में बहुत अच्छे स्तर पर सफलता हासिल कर सकता है। अतः इस अवस्था में युवाओं पर माता-पिता को अपने नजरिए को मुसल्लत करने के बजाय उनकी काबिलियत को महत्व देना अधिक कारगर सिद्ध होता है।

उत्तर-आधुनिक जीवन में पैसा, रुतबा, दिखावा, उच्च-स्तरीय जीवन शैली की चाहत ने अजनबीपन की भावना पनपने लगी है । कई लोगों के बीच में होकर भी अकेलेपन की पीड़ा हर व्यक्ति की नियति बन गई है । क्योंकि समकालीन जीवन में मनुष्य अर्थ को सर्वाधिक महत्व देने लगा है। उसके लिए भावनात्मक रिश्तों का कोई मूल्य नहीं। संयुक्त परिवार बिखरने लगे हैं और इसके फलस्वरूप सबसे अधिक घर के बच्चों और युवाओं का जीवन और उनकी मनोदशा बेहद प्रभावित होती है । एकल परिवार में परवरिश के कारण घर के अन्य सदस्यों से मिलने वाला आत्मीय प्रेम, सुरक्षा, स्वार्थहीन रिश्तों का नुकसान भुगतना पड़ता है। महंगाई और उच्च-जीवन शैली को जीने के लिए आधुनिक दौर में स्त्री-पुरुष दोनों नौकरीपेशा है और इसी कारण अपनी संतान को अपेक्षित स्नेह, उनका वात्सल्यपूर्ण समय दे पाने में असमर्थ होते हैं। माता-पिता दोनों अपनी नौकरी और जीवन के तनाव में अपनी संतान के प्रश्नों, युवामन की जिज्ञासाओं और प्रश्नों का जवाब देने के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। 'पत्ताखोर' उपन्यास में वर्तमान दौर में स्त्री स्वातंत्र्य के प्रति विकृत और खोखली मानसिकता की शिकार वनश्री के माध्यम से आधुनिक विडम्बना को अभिव्यक्त किया गया है। "पुत्र घुलता रहा, पत्नी बैग लटकाए, धूप का चश्मा चढ़ाए अपने निज का मकान बनाने के

स्वप्न सँजोती रही और वे दिनोंदिन स्थितप्रज्ञ बनने की दिशा में अग्रसर होते-होते चुप्पी के भीतरी कुएं में उतरते चले गए। पद्मपत्र पर टिकी जल की बूंद की तरह वे दीन-दुनिया से बेखबर घर से ऑफिस और ऑफिस से घर आते-जाते रहे, चिंतन और जीवन अन्वेषण की प्रखर धारा में डूबते-उतराते रहे। .....एक ही घर में रहते हुए भी तीन जिंदगियाँ अपने-अपने द्वीप में बहती-विचरती रहीं, बिना किसी को छूते हुए।"[6] घर के ऐसे माहौल का युवाओं की मनस्थिति पर बहुत गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नौकरीपेशा माता-पिता दोनों नौकरी करने आदित्य पूरा दिन उस वीरान घर की खामोशी और असुरक्षा में जीने को विवश इस मानसिक अकेलेपन से उदासीन होकर युवावस्था के प्रारंभिक दौर में अपने जीवन की खुशी की तलाश में भटकने लगता है। इस भटकाव में नशेबाज अभिज्ञान आदित्य की मानसिक अवसाद और अपरिपक्व मानसिकता का लाभ उठाते हुए उसे 'ज़िंदगी के मजे' के लालच में भ्रमित करते हुए सिगरेट के रूप में हेरोइन देता है जिससे आदित्य पहली बार नशे से मिलने वाली अस्थिर खुमारी और मदहोशी को महसूस करता है। नशे की भयावहता और वीभत्सता के संबंध में सुधांशु कहता है कि "यह नशा है जो सर्वनाश की ओर धकेल देता है। यह सुख नहीं सुख की छाया है –क्षणभर का बिना अर्जित किया हुआ कृत्रिम आनंद। जीवन का चिरंतन, स्वाभाविक और शाश्वत आनंद नहीं। जो तुम्हें आज प्रेमिका के चेहरे की तरह लुभावना लग रहा है न .....देखना किसी दिन वह सूअर के थूथन की तरह ज़िंदगी को घिनौना बनाकर रख देगा।"[7] यह पहली बार होता है जब आदित्य जिस आत्मिक समृद्धि की तलाश में होता है वो इस नशे की पिनक के रूप में उसे नशेबाज बनने की ओर लालायित करती है और कभी शाश्वत आनंद की ओर लौटने नहीं देती। 'हेरोइन' जानलेवा नशे का एक प्रकार होता है। आठ ग्राम हेरोइन की मात्रा 'पत्ता' कहलाती है और जो इस पत्ते को लेने का आदि बन जाता है उसे 'पत्ताखोर' कहा जाता है। हेमंत बाबू अपने पुत्र के मानसिक अकेलेपन के इस खतरनाक परिणाम से अफसोस करते हुए महसूस करते हैं कि "बहा हुआ पानी, मुरझाए पत्तों का हरापन और बीता हुआ बचपन कभी लौटकर नहीं आता।"[8] आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नशे की इस जानलेवा आदत के कारण अनगिनत माता-पिता और युवा अपने असल जीवन के सौंदर्य को पुनः प्राप्त करने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। नशाखोरी की समस्या आज व्यापक स्तर पर व्याप्त है। इस लत से बचाने के लिए युवाओं का जीवन के प्रति

सकारात्मक दृष्टिकोण एवं जीवन के प्रति आकर्षण, आत्मिक भावात्मक प्रेम की समृद्धि का होना अत्यंत आवश्यक है। सही सहारा देने वाले आत्मीय रिश्ते के अभाव में अभिजीत, विश्वजीत जैसे लोग गलत दिशा में धकेलने के लिए हर वक्त नजर गड़ाए बैठे रहते हैं। युवावस्था में ऐसे भ्रामक मित्र के रूप में दुश्मन से बचने के लिए युवाओं का मानसिक रूप से विवेकपूर्ण और सुदृढ़ होना अत्यंत आवश्यक है।

लेखिका मधु कांकरिया ने वर्तमान समय में शिक्षा-व्यवस्था के औचित्य और लक्ष्य से डगमगाने की ओर चिंतन-दृष्टि केन्द्रित करते हुए स्पष्ट करती है कि "कॉलेज की भीतरी दुनिया में अव्यवस्था की एक ऐसी व्यवस्था थी कि वह कॉलेज विद्या का मंदिर नहीं वरन् चंदा उगाही, रंगदारी वसूली, टाइम पास एवं कच्चे अपराधों की एक ऐसी प्रयोगशाला थी जहां के कई वर्तमान एवं भूतपूर्व छात्र स्थानीय गुंडागर्दी एवं दादागीरी के मानक से प्रथम श्रेणी के थे और आगे मार्ग प्रशस्त था।"[9] इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक उद्देश्य भी आज व्यर्थ की छिछली राजनीति में तब्दील हो गया है।

वर्तमान दौर में युवाओं में बढ़ती पाश्चात्य संस्कृति और बाजारवाद से प्रभावित है और अपने वास्तविक कर्तव्यों से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। लेखिका मधु कांकरिया ने 'पताखोर' उपन्यास में युवाओं के वर्तमान हालातों से परदा हटाते हुए स्पष्ट किया कि "अब वे देश की मुक्ति एवं जीवन की सार्थकता जैसे विराट प्रश्नों से टकराने वाले जाबाज़ युवा की बजाय जीविका के सामने घुटने टेकने वाले केंचुओं में तब्दील हो गए थे। उसी युवा पीढ़ी के समृद्ध युवा अब बदलती फिजाँ में पाश्चात्य संस्कृति में ढलकर माइकेल जैक्सन की तरह कमर और कूल्हे मटकाने लगे थे। वुमेन और वाइन में अपनी मुक्ति खोज रहे थे। पढ़ी लिखी मध्यवर्गीय पीढ़ी का एक तबका रिश्वतख़ोरी, सट्टेबाजी, दलाली और ब्लैक मार्केटिंग में डूबा हुआ था तो दूसरा बी.ए., एम.ए. पास वाला तबका प्राइवेट ट्यूशन, क्लर्की, पिठनगीरी, कमीशन एजेंट, डोर-टू-डोर सैल्समैन एवं मकान की दलाली से लेकर रंडी की दलाली तक में स्वयं को खपा रहा था।"[10] इस प्रकार वर्तमान समय में दिग्भ्रमित युवा जीवन के मूल में अनैतिक गतिविधियों का अहम प्रभाव परिलक्षित होता है जो कि अत्यंत चिंतनीय है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -1
January
2025

इसके साथ ही आधुनिकता का दबाव और उसके फलस्वरूप शहरों की ओर पलायन युवा शक्ति के विनाश का कारण बन रही है। हेरोइन जैसे नशों का जानलेवा जहर आज राष्ट्र की स्वर्ण समान युवा शक्ति को राख में बदल रही है। आज हर गली, हर घर में नशेबाज मिलता है। "हजारों-हजारों हाइड्रोजन बम की शक्ति रखनेवाली यह युवा शक्ति किस प्रकार नशे की अंधेरी सुरंग में घुसी हुई है। पर कौन रूपांतरित कर रहा है अक्षय ऊर्जा के इन डायनासोरो को रेंगते कीड़ों में? आधुनिकता का दबाव या विकास का यह घातक पैटर्न जो हर साल गांवों से पलायन करते हजारों-हजारों युवकों को शहर की झुग्गियों और बस्तियों में शरण लेने को बाध्य कर रहा है। कौन हैं ये? कहाँ से आए हैं?"[11] आधुनिक दिखने के ढोंग में युवा अपना जीवन व्यर्थ गँवाते जा रहे हैं। नशाखोरी, चोरी, डकैती आदि किसी भी बुरी आदत से उबरने के लिए मनुष्य की आत्मिक निर्णय क्षमता अहम भूमिका अदा करती है। आदित्य का डी-टोक्सिफिकेशन करवाने के दौरान प्रो. रामकृष्ण शास्त्री आदित्य को शाश्वत सत्य की अनुभूति करवाने का प्रयास करते हुए प्रत्येक निराशाग्रस्त मनुष्य की प्रेरणास्वरूप कहते हैं कि "आप स्वयं को शिव समझो आप शिव हैं। आप स्वयं को शव समझे तो आप शव हैं। .....ज़िंदगी उसी की है जो जीना जानता है, आकाश उसी का है जो उड़ना जानता है।"[12]

नशे की लत से उबरने के कुछ ही समय बाद आदित्य के कमजोर मन पर ऐसा आघात होता है कि वह पुनः नशे के गहन गर्त में धंस जाता है और इस बार इतनी भयावह अवस्था होती है कि आदित्य अपने भीतर की ग्लानिवश आत्महत्या करने का निर्णय करने पर विवश और लाचार हो जाता है। लेकिन तभी एक स्त्री को अपने पति के जीवन को बचाने के लिए की जाने वाली जद्दोजहद से आदित्य जीवन के मूल्य की मूल्यवत्ता के प्रति चिंतन पर विवश होता है और जीवन एवं मृत्यु की इसी खींचतान में आदित्य अभावों से पूर्ण मोहनबाग लेन के झुग्गी-झोपड़ियों में बसे लोगों के जीवन के जीवन को करीब से देखने आ अवसर मिलता है तो आदित्य को जीवन की वास्तविकता का एहसास होता है। इस जीवन में अभावों के दुष्चक्र के बावजूद हरिया, कालिदास, सहदेव और इतवारी आदि पात्रों को देखता है कि वे अपने जीवन से हर नहीं मानते हैं, बल्कि हर दिन नई ऊर्जा के साथ जीते हैं। इन लोगों के साथ रहने से आदित्य जीवन को नई सौंदर्यपूर्ण दृष्टि से देखना प्रारम्भ करता है।

उसे होश में रहने पर भी ज़िंदगी का संघर्ष प्रेरणा प्रदान करता है। इसके बाद आदित्य एक जिम्मेदार युवा की भांति मोहनबाग लेन के श्रमजीवियों के जीवन में सुधार के लिए उन्हें प्रेरित करता है। यहाँ गंदगी से बजबजाती लेकिन हर दिन जीवन की नई शुरुआत करने वाली विखंडित ज़िंदगियों ने आदित्य जैसे भ्रमित युवा को भी अखंडित जीवन दर्शन प्रदान किया। इस प्रकार युवा असीम क्षमताओं से पूर्ण होता है। यदि उन्हें सही दिशा और मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो राष्ट्र के विकास में नींव की भूमिका अदा करता है। युवा अवस्था की ऊर्जा और साहस को समाज, परिवार के द्वारा सही मार्ग और अवसर प्रदान करने से युवा मन कुंठित न होकर आत्मिक एवं सामाजिक उत्थान की ओर अग्रसर होगा जिससे राष्ट्र की प्रगति एवं विकास सुनिश्चित हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. पी. जी. पाठक, शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2013, पृ. सं. 145
2. हरिशंकर परसाई, आवारा भीड़ के खतरे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 1
3. मधु कांकरिया, पत्ताखोर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. सं. 10
4. वही, पृ. सं. 11
5. वही, पृ. सं. 18
6. वही, पृ. सं. 23
7. वही, पृ. सं. 45
8. वही, पृ. सं. 25
9. वही, पृ. सं. 53
10. वही, पृ. सं. 52
11. वही, पृ. सं. 129
12. वही, पृ. सं. 89